वैज्ञानिकगण : डॉ० विक्रम भारती, डॉ० सी0एस0चौधरी, डॉ० संगीता सहानी, डॉ० कविता, डॉ० उदय मुखर्जी, डॉ० राजेश कुमार, डॉ० वी.के चौधरी, डॉ० अनिल पाण्डेय एवं श्री चंद्रकांत सिंह

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

समस्तीपुर – 848 125, बिहार

TCA/AICRP/F/217/2022

उन्नत उत्पादन तकनीक: तेलहन

राई
तोरिया
पीली सरसों

****

तेलहन उन्नयन परियोजना

डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

(समस्तीपुर)–848 125; बिहार

उन्नत उत्पादन तकनीक
राई–तोरिया–पीली सरसों

उन्नत प्रभेद : राई–तोरिया–पीली सरसों
राई: समयकालीन सिंचित/असिंचित खेती : पूसा सरसों 25; पूसा बोल्ड ;पूसा महक राई: अगात खेती :पूसा महक;
सिंचित– पिछात खेती : राजेन्द्र सुफलाम;
राजेन्द्र अनुकूल; एन.आर.सी.एच.बी.–101
तोरिया : आर0ए0यू0टी0एस0–17, पी0टी0 –303, पांचाली
पीली सरसों : राजेन्द्र सरसों –1, स्वर्णा, 66–197–3, वाई.एस.एच.–401, एन.आर.सी.वाई.एस.–5
बीज दर : पांच किलोग्राम प्रति हेक्टेयर
बुआई का समय :
तोरिया –पीली सरसों : 10–15 अक्टूबर
राई: समयकालीन सिंचित खेती : 15–25 अक्टूबर
राई : पिछात–सिंचित खेती :15 नवम्बर से 7 दिसम्बर
खाद –उर्वरक : बुआई से 20 दिनों पहले :
कम्पोस्ट 100 कु0/हे0
तोरिया –पीली सरसों :
बुआई के समय : नेत्रजन 30;स्फुर 40;
पोटाश 40 कि0ग्राम/हे0
उपरिवेशन : नेत्रजन 30 कि0ग्राम/हे0
राई: समयकालीन सिंचित– पिछात खेती
बुआई के समय : नेत्रजन 40; स्फुर 40;
पोटाश 40 कि0ग्राम/हे0
उपरिवेशन : नेत्रजन 30 कि0ग्राम/हे0
राई: समयकालीन सिंचित– पिछात खेती
बुआई के समय : नेत्रजन 40; स्फुर 40;
पोटाश 40 कि0ग्राम/हे0
उपरिवेशन : नेत्रजन 40 कि0ग्राम/हे0
सूक्ष्मपोषक तत्व:
गंधक : गंधक 20– 30 कि0ग्राम/हे0
जिंक : जिंक सल्फेट 25 कि0ग्राम/हे0
बोरान : बोरेक्स (सुहागा) 10 कि0ग्राम/हे0
बुआई : 30X10 सें0मी0 ; 4/5 से0मी0 गहराई पर
बछनी : अतिरिक्त पौधे निकालकर ,
पौधा संख्या 3.3लाख/हे0
खरपतवार नियंत्रण : निकौनी कमौनी बुआई से तीसरे सप्ताह
बीज उपचार : थीरम 2 से 3 ग्राम /कि0बीज
सिंचाई : तोरी : एक; फूल अवस्था 25 दिन;
पीली सरसों– राई :दो
फूल अवस्था 35 दिन ; फली अवस्था 55 दिन
परिपक्वता : 75 प्रतिशत फलियॉ भूरी – पीली होने पर
भण्डारण : 8 प्रतिशत नमी पर कोठिला (सीड बिन) में करें

वैज्ञानिकगण : डॉ० विक्रम भारती, डॉ० सी0 एस0 चौधरी, डॉ० संगीता सहानी, डॉ० कविता, डॉ० उदय मुखर्जी, डॉ० राजेश कुमार, डॉ० वी.के चौधरी, डॉ० अनिल पाण्डेय एवं श्री चंद्रकांत सिंह
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
समस्तीपुर – 848 125, बिहार

TCA/AICRP/F/218/2022

उन्नत उत्पादन तकनीक: तेलहन

तीसी एकल–उद्देश्यीय(दाने हेतु) शुद्ध खेती

****

तेलहन उन्नयन परियोजना
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
(समस्तीपुर)–848 125; बिहार

तीसी एकल–उद्देश्यीय (दाने हेतु) शुद्ध खेती

उन्नत प्रभेद : टी. 397, शुभ्रा, गरिमा, शेखर
भूमि चुनाव : भारी मिट्टया (मटियार या मटियार दोमट)
बुआई का समय : 10 अक्टूबर से 15 नवम्बर
अक्टूबर अन्त तक अधिक उपज क्षमता
खादः बुआई से 20–30 दिनों पहलेःकम्पोस्ट 60 कु0/हे0
उर्वरक :
सिंचित : नेत्रजन 20 स्फुर 30 किलो ग्रा0/हे0
: उपरिवेशन : नेत्रजन 40 कि0 ग्रा0/हे0
असिंचित : नेत्रजन 20 स्फुर 15 कि0ग्रा0/हे0
सूक्ष्मपोषक तत्वः
गंधक : गंधक 20– 30 कि0ग्राम/हे0
जिंक : जिंक सल्फेट 25 कि0ग्राम/हे0
बोरान : बोरेक्स (सुहागा) 10 कि0ग्राम/हे0

बीज उपचार : थीरम 3 ग्राम / कैप्टाफ 2 ग्राम /कि0 बीज
बीज दर : 15–20 किलोग्राम प्रति हेक्टर
बुआई : 30 सें0मी0 कतार से कतार की दूरी
2/3 से0मी0 गहराई पर
खरपतवार नियंत्रणः निकौनी– कमौनी 20–25 दिनो तक
सिंचाई : दो
फूल अवस्था : बुआई से 35 दिनों बाद
फली अवस्था : बुआई से 65 दिनों बाद
कटनी–दौनी : पकने की उचित अवस्था पर
परिपक्वता : जब पत्तिया सूखने लगें, छीमिया भूरे रंगकी तथा बीज चमकदार हो जाये
भण्डारण : 8–10 प्रतिशत नमी पर कोठिला (सीड बिन) में

वैज्ञानिकगण : डॉ० विक्रम भारती, डॉ० सी0एस0चौधरी, डॉ० संगीता सहानी, डॉ० कविता, डॉ० उदय मुखर्जी, डा0 राजेश कुमार, डा0 वी.के चौधरी, डॉ० अनिल पाण्डेय एवं श्री चंद्रकांत सिंह
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
समस्तीपुर – 848 125, बिहार

TCA/AICRP/F/222/2022

राई–तोरिया–सरसों : रोग प्रबन्धन

आल्टरनेरिया पत्रलांक्षन

(*आल्टर्नेरिया ब्रैसिकी*)

रासायनिक / जैविक स्रोतों द्वारा

****

तेलहन उन्नयन परियोजना
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
(समस्तीपुर)–848 125; बिहार

राई–तोरिया–सरसों : रोग प्रबन्धन रासायनिक / जैविक स्रोतों द्वारा

आल्टरनेरिया पत्रलांक्षन

(*आल्टर्नेरिया ब्रैसिकी*)

(*अ0 ब्रैसिसीकोला*)

बिहार में यह रोग ज्यादा प्रकोप करता है। इस रोग से 17–50 प्रतिषत तक उपज में कमी पायी जाती है।

अ–परपोषी फसलों का फसलचक्र अपनाना चाहिए।

रोगग्रसित फसल अवषेषों को जला देना चाहिए।

संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए।

अधिक नत्रजनीय उर्वरकों के प्रयोग से रोग की उग्रता ज्यादा होती है।

मैन्कोजेब का 0.2प्रतिषत पर्णीय छिड़काव बुवाई के 40 व 60 दिन बाद करने पर आल्टरनेरया झुलसा का प्रभाव कम पाया गया है।

- ❑ मानकोजेब के 0.2 प्रतिशत जलीय घोल का फूल अवस्था पर छिड़काव एवम् फली अवस्था पर डाइफेनकोनाजोल 0.05 प्रतिशत जलीय घोल का छिड़काव या
- ❑ प्रोपीकोनाजोल 0.1 प्रतिशत की दर से बीजोपचार फूल अवस्था पर 0.1 प्रतिशत जलीय घोल का छिड़काव या
- ❑ आइप्रोडियोन + कार्बेण्डाजीम (1:1) 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार
- ❑ फूल एवम् फली अवस्था पर कार्बेण्डाजीम + मानकोजेब (1:1) 0.2 प्रतिशत जलीय घोल का छिड़काव या
- ❑ सूक्ष्मपोषक तत्वों की कमी वाले खेतों में आवश्यकतानुसार 15 कि.ग्रा./हे. ज़िंक सल्फ़ेट + 10 कि.ग्रा./हे. बोरॉन + 20–40 कि.ग्रा./हे. सल्फ़र का मिट्टी में व्यवहार
- ❑ फूल एवम् फली अवस्था पर कार्बेण्डाजीम + मानकोजेब के 0.2 प्रतिशत जलीय घोल का छिड़काव या
- ❑ लहसुन कन्द सत्व 20 प्रतिशत की दर से 5 प्रतिशत गाय के दूध के साथ मिलाकर फूल एवम् फली अवस्था पर एक से दो छिड़काव
- ❑

रोग की तीव्रता में कमी के साथ उपज में वृद्धि

वैज्ञानिकगण : डॉ० विक्रम भारती, डॉ० सी0एस0चौधरी, डॉ० संगीता सहानी, डॉ० कविता, डॉ० उदय मुखर्जी, डॉ० राजेश कुमार, डॉ0 वी.के चौधरी, डॉ० अनिल पाण्डेय एवं श्री चंद्रकांत सिंह
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
समस्तीपुर – 848 125, बिहार

TCA/AICRP/F/225/2022

सरसों का लाही, चेंपा या माहू: प्रबन्धन

****

तेलहन उन्नयन परियोजना
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
(समस्तीपुर)–848 125; बिहार

एकीकृत कीट प्रबंधन

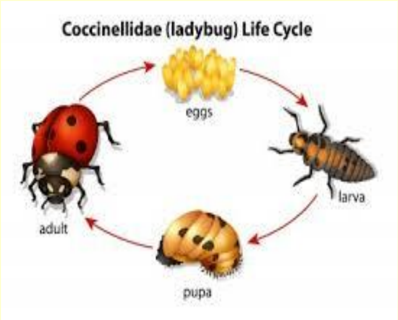

फसल की बुआई अनुषंसा के अनुसार 15 अक्टूबर से पहले

उर्वरकों की संतुलित/अनुषंसित मात्रा

नत्रजन उर्वरकों से फसल में अधिक चेंपा

नियमित रूप से खेतों का भ्रमण करना 10 दिन के अन्तराल पर 2–3 बार ग्रसित टहनियों को तोड़कर नष्ट करना

फसल में कम से कम 10 प्रतिषत पौधों पर लाही, 26 – 28 लाही, प्रति पौधा हो, तब छिड़काव करना चाहिये ।

- डाइमिथोयट (रोगोर) 30 पायस सांद्रण एक ली. कीटनाषक को 600–800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे.छिड़काव
- 15 दिन के अंतराल से पुनः छिड़काव करना चाहिये ।
- छिड़काव हमेषा षाम के समय करना चाहिये
- परागण करने वाले कीटों की सुरक्षा
- प्राकृतिक षत्रु जैसे
- लेडी बर्ड बीटिल (*काक्सीनेला* स्पीसीज),
- सिरफिड (*सिरफिस*स्पीसीज),
- ग्रीन लेस विंग (क्राइसोपरला)
- परजीव्याभ माहू पर्याप्त हों तो
- छिड़काव नहीं करना चाहिये ।